
आलस्य और अलबेलापन - 49

अव्यक्त बापदादा :-

» _ » मैं बाप का हूँ ये बार-बार स्मृति में लाना पड़ता है। तो बार-बार स्मृति में लाना, विस्मृति है तब तो स्मृति में लाते हो ना? तो हाँ-ना, स्मृति-विस्मृति-ये युद्ध लवलीन अनुभूति करने नहीं देती है।

» _ » वर्तमान समय बच्चों को जो युद्ध वा मेहनत करनी पड़ती है वो व्यर्थ और समर्थ की युद्ध ज्यादा चलती है। कोई-कोई बच्चों में व्यर्थ देखने के संस्कार नेचुरल नेचर हो गई है। कोई में सुनने की, कोई में वर्णन करने की, कोई में सोचने की - ऐसी नेचुरल नेचर हो गई है जो वो समझते ही नहीं हैं कि ये हम करते भी हैं।

» _ » अगर कोई इशारा भी देते हैं तो माया की समझदारी होने के कारण अपने को बहुत समझदार समझते हैं या तो माया के समझदार बन जाते वा अलबेलापन आ जाता - ये तो चलता ही है, ये तो होता ही है।

» _ » माया की समझदारी से रांग में भी अपने को राइट समझते हैं। होती माया की समझदारी है लेकिन समझेंगे-मेरे जैसा ज्ञानी, मेरे जैसा योगी, मेरे जैसा सेवाधारी कोई है ही नहीं। क्योंकि उस समय माया की छाया मन और बुद्धि को ऐसे वशीभूत कर देती है जो यथार्थ निर्णय कर नहीं सकते।

» _ » मायावी योगी वा मायावी ज्ञानी समझदार, ईश्वरीय समझ से किनारा करा देती है। माया की समझदारी भी कम नहीं है। माया से योग लगाने वाले भी अचल-अटल योगी हैं। इसलिये फ़र्क नहीं समझते। उस समय के बोल का नशा भी सभी जानते हो ना - कितना बढ़िया होता है।

» _ » इसलिये बापदादा सदा बच्चों को कहते हैं कि प्राप्तियों की अनुभूतियों के सागर में समाये रहो। सागर में समाना अर्थात् सागर समान बेहद के प्राप्ति स्वरूप बन कर्म में आना। (05.12.1994)

➤➤ स्मृति विस्मृति

» _ » ये लवलीन अवस्था का अनुभव नही करने देती

→ व्यर्थ देखना सुनना नेचुरल नेचर हो गई है

→ कोई इशारा भी देते है तो

- गुस्सा आता है
- मानते नही
- इगनोर करते है

» _ » माया की समझदारी के कारण अपने को बहुत समझदार समझते हैं

→ अपने को कम समझदार समझना है

➤➤ डबल समझदार

- » _ » पहले चेकिंग फिर करना
- » _ » पहले मिलाना फिर प्रेक्टिकल में लाना
- » _ » पहले सोचना चेकिंग करना
- » _ » संकल्प करने से पहले बोल से पहले कर्म से पहले

→ निजी संस्कार बना दो

- देखना परखना
- स्वीकार करना

- » _ » माया की समझदारी से
 - माया के समझदार बन जाते
 - अलबेलापन आ जाता
 - ये तो होता ही है चलता ही है
 - रांग कर रहे हैं परंतु राइट समझते हैं
 - क्योंकि माया की छाया मन और बुद्धि को ऐसे वशीभूत कर देती है कि यथार्थ निर्णय करने नहीं देती।
-

➤➤ माया से योग लगाने वाले

- » _ » मायावी योगी
 - » _ » मायावी ज्ञानी
 - » _ » ईश्वरीय समझ से किनारा करने वाले
 - » _ » अचल अटल योगी
 - माया से ही निरंतर योग लगा हुआ
 - » _ » परमात्म प्रेम में खोए हो तो युद्ध नहीं होगी
 - » _ » माया की छाया लॉक लगा देती है
 - ये नीचे ले आती हैं
 - व्यक्ति
 - बातें
 - वस्तुएँ
 - चीज
 - » _ » ये सब वायुमंडल नीचे लाता है पर नीचे आना नहीं
-

➤➤ प्राप्तियों की अनुभूति योग के सागर में समाए रहो

- » _ » परमात्म प्रेम
 - एक है प्राप्ति
 - एक है अनुभूति

- » _ » प्राप्ति तो सब को हो चुकी है पर उसकी अनुभूति में खो जाना परमात्म प्रेम में खो जाना
 - » _ » ऐसी आत्माओं की झलक और फलक ऐसी होगी कि माया भी आंख उठाकर नहीं देख सकती।
 - » _ » सागर में समा जाना अर्थात् सागर समान बेहद के प्राप्ति स्वरूप बन कर्म में आना।
 - » _ » वैराग जहां राग है ही नहीं राग का अभाव है संसार के प्रति राग स्वतः ही समाप्त हो गया है
 - » _ » प्रेम के पुष्प जहां खिलते हैं प्रेम की अविरल धारा बहती है स्वतः ही संसार से वैराग हो जाता है लाना नहीं पड़ता वो सहज योग है।
 - » _ » संगमयुग की महिमा गाओ तो
 - आंखें गीली हो जाए
 - सजल हो जाए ये आंखें
 - नयन गीले हो जाए
 - अश्रुधारा बह जाए
 - » _ » जहां प्रेम के पुष्प खिलते हैं वो प्रेम को खिलने दो अपने अंदर
 - हृदय में परमात्म प्रेम के फूल खिलने लगे
 - महक सुगंध उठने लगे तो स्वतः माया की दुर्गंध जो जन्म जन्म से घेरे हुए हैं हट जायेगी
 - मौसम की तासीर बदलने लगे
 - क्योंकि हृदय में ज्ञान का प्रकाश होने लगा।
-

- सागर में समाना अर्थात् सागर समान बेहद के प्राप्ति स्वरूप बन कर्म में आना
- » _ » प्राप्ति की अनुभूतियों के सागर में समाए रहो
 - स्वयं को डूबो देना है तभी सरल होगा
 - » _ » योग करना योग लगाना ये शब्द ही गलत हैं। भाषा की असमर्थता दिखा रहा है। योग क्रिया है ही नहीं।
 - ध्यान - कुछ न करना ही ध्यान है
 - » _ » स्वयं में स्थित हो जाना ही योग है।
 - » _ » आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाना ही योग है।
 - आत्मा में रस उत्पन्न हो जाए
 - दिन रात भी उस अवस्था में चले जाए।
-